**Ganesh Chalisa Lyrics: गणेश चालीसा लिरिक्स।**

**।। दोहा।।**

**जय गणपति सदगुण सदन, कविवर बदन कृपाल।  
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरिजालाल॥**

**।। चौपाई।।**

**जय जय जय गणपति गणराजू।  
मंगल भरण करण शुभः काजू॥  
जै गजबदन सदन सुखदाता।  
विश्व विनायका बुद्धि विधाता॥**

**वक्र तुण्ड शुची शुण्ड सुहावना।  
तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन॥  
राजत मणि मुक्तन उर माला।  
स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला॥**

**पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूलं।  
मोदक भोग सुगन्धित फूलं॥  
सुन्दर पीताम्बर तन साजित।  
चरण पादुका मुनि मन राजित॥**

**धनि शिव सुवन षडानन भ्राता।  
गौरी लालन विश्व-विख्याता॥  
ऋद्धि-सिद्धि तव चंवर सुधारे।  
मुषक वाहन सोहत द्वारे॥**

**कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी।  
अति शुची पावन मंगलकारी॥  
एक समय गिरिराज कुमारी।  
पुत्र हेतु तप कीन्हा भारी॥**

**भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा।  
तब पहुंच्यो तुम धरी द्विज रूपा॥  
अतिथि जानी के गौरी सुखारी।  
बहुविधि सेवा करी तुम्हारी॥**

**अति प्रसन्न हवै तुम वर दीन्हा।  
मातु पुत्र हित जो तप कीन्हा॥  
मिलहि पुत्र तुहि, बुद्धि विशाला।  
बिना गर्भ धारण यहि काला॥**

**गणनायक गुण ज्ञान निधाना।  
पूजित प्रथम रूप भगवाना॥  
अस कही अन्तर्धान रूप हवै।  
पालना पर बालक स्वरूप हवै॥**

**बनि शिशु रुदन जबहिं तुम ठाना।  
लखि मुख सुख नहिं गौरी समाना॥  
सकल मगन, सुखमंगल गावहिं।  
नाभ ते सुरन, सुमन वर्षावहिं॥**

**शम्भु, उमा, बहुदान लुटावहिं।  
सुर मुनिजन, सुत देखन आवहिं॥  
लखि अति आनन्द मंगल साजा।  
देखन भी आये शनि राजा॥20॥**

**निज अवगुण गुनि शनि मन माहीं।  
बालक, देखन चाहत नाहीं॥  
गिरिजा कछु मन भेद बढायो।  
उत्सव मोर, न शनि तुही भायो॥**

**कहत लगे शनि, मन सकुचाई।  
का करिहौ, शिशु मोहि दिखाई॥  
नहिं विश्वास, उमा उर भयऊ।  
शनि सों बालक देखन कहयऊ॥**

**पदतहिं शनि दृग कोण प्रकाशा।  
बालक सिर उड़ि गयो अकाशा॥  
गिरिजा गिरी विकल हवै धरणी।  
सो दुःख दशा गयो नहीं वरणी॥**

**हाहाकार मच्यौ कैलाशा।  
शनि कीन्हों लखि सुत को नाशा॥  
तुरत गरुड़ चढ़ि विष्णु सिधायो।  
काटी चक्र सो गज सिर लाये॥**

**बालक के धड़ ऊपर धारयो।  
प्राण मन्त्र पढ़ि शंकर डारयो॥  
नाम गणेश शम्भु तब कीन्हे।  
प्रथम पूज्य बुद्धि निधि, वर दीन्हे॥**

**बुद्धि परीक्षा जब शिव कीन्हा।  
पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीन्हा॥  
चले षडानन, भरमि भुलाई।  
रचे बैठ तुम बुद्धि उपाई॥**

**चरण मातु-पितु के धर लीन्हें।  
तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥  
धनि गणेश कही शिव हिये हरषे।  
नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे॥**

**तुम्हरी महिमा बुद्धि बड़ाई।  
शेष सहसमुख सके न गाई॥  
मैं मतिहीन मलीन दुखारी।  
करहूं कौन विधि विनय तुम्हारी॥**

**भजत रामसुन्दर प्रभुदासा।  
जग प्रयाग, ककरा, दुर्वासा॥  
अब प्रभु दया दीना पर कीजै।  
अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै॥**

**।। दोहा।।**

**श्री गणेश यह चालीसा, पाठ करै कर ध्यान।  
नित नव मंगल गृह बसै, लहे जगत सन्मान॥  
सम्बन्ध अपने सहस्त्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।  
पूरण चालीसा भयो, मंगल मूर्ती गणेश॥**

**allbhajan.com**